तृतीय अध्याय
ग़ज़ल : सैद्धांतिक अध्ययन

तृतीय अध्याय

ग़ज़ल सैद्धांतिक अध्ययन

प्रस्ताविक :-

कवि नीरज जी के काव्य में 'ग़ज़ल' के तत्व मिल जाते हैं। अतः उनके काव्य में कौन - कौनसी ग़ज़लें हैं ? यह देखने से पहले ग़ज़ल के बारे में जानना आवश्यक है। इसलिए हम 'ग़ज़ल का अर्थ','ग़ज़ल की परिभाषा','विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में ग़ज़ल क्या हैं ?' 'ग़ज़ल के अंग' और 'ग़ज़ल के प्रकार' के बारे में जानकारी लेंगे -

" हिंदी कवियों द्वारा ग़ज़ल लेखन की परंपरा की तलाश की जाए तो उसके सूत्र चौदहवीं शताब्दी के आसपास से मिलने आरंभ हो जाते हैं। इसमें एक तरफ अमीर खुसरो, कुतुब कुली शाह और वली दकनी हैं तो दूसरी ओर कबीर और मीरा भी।

खड़ीबोली के भाषा का रूप ग्रहण करने के बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ऐसे पहले प्रमुख हिंदी साहित्यकार हैं जिन्होंने ग़ज़लें लिखीं। आज जिसे हिंदी ग़ज़ल कहकर अभिहित किया जाता है, उसकी विकास - यात्रा के प्रस्थान संकेत वहीं मिलते हैं। आधुनिक हिंदी काव्य में निराला का प्रवेश जिस तरह अन्यान्य काव्य - रूपों के क्षेत्र में विशिष्ट है, उसी तरह ग़ज़ल लेखन में भी निराला ने सार्थक पहल की।

भाषा और आंतरिक रचना - विधान की दृष्टि से निराला के बाद त्रिलोचन शास्त्री ऐसे प्रमुख एकमात्र कवि हैं, जिनकी ग़ज़लें हिंदी ग़ज़ल कहलाने की पात्रता रखती हैं। इस दृष्टि से उनकी ग़ज़लों के कुछ शेर देखे जा सकते हैं -

"यह चिंता है वह चिंता है,
जी को चैन कहाँ मिलता है।
बिस्तरा है न चारपाई है,
ज़िंदगी हमने खूब पाई है।" [1]

इसप्रकार कवि नीरज जी की ग़ज़ल भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। उनकी ग़ज़ल में सामाजिक विषय दिखाई देते हैं। ग़ज़ल में अधिकतर प्रेम का वर्णन ही पाया जाता है, मगर नीरज जी की ग़ज़लें उनसे हटकर हैं। सामान्य लोगों की जीवनदशा ही काव्य में दिखाना, उनका मकसद रहा है। अब हम ग़ज़ल के बारे में अधिक जानकारी लेने का प्रयास करेंगे।

3.1 ग़ज़ल : सैद्धांतिक अध्ययन

3.1.1 ग़ज़ल का अर्थ :-

हिंदी साहित्य में ग़ज़ल का योगदान काफी अरसे से चलता आ रहा है। ग़ज़ल को उर्दू से हिंदी में लाने का प्रयास किया गया। ग़ज़ल का मूल विषय प्रेम ही पाया जाता है और प्रेम में भी विरह पक्ष का काफी प्रभावी चित्रण इसमें देखने को मिलता है।

" 'ग़ज़ल' अरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'प्रेमिका से वार्तालाप'। ग़ज़ल मूलतः एक ऐसी काव्य-विद्या है, जिसका केन्द्रीय विषय है - 'प्रेम'।

सरदार मुजावर के अनुसार - 'ग़ज़ल शब्द बुनियादी तौर पर अरबी भाषा का है। 'ग़जाला' से 'ग़ज़ल' शब्द बना है। 'ग़जाला' का अर्थ है - हिरन। हिरन का जो छोटा बच्चा होता है, उसको 'ग़ज़ला' कहा जाता है। 'ग़ज़ला' इस शब्द में ही एक तरह की खूबसूरती और नजाकत भरी हुई है। इसीलिए शायद नाजुक भावों को अभिव्यक्त करनेवाली इस विधा को 'ग़ज़ल' नाम से अभिहित किया गया होगा।'

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना उपर्युक्त मत से सहमत नहीं है, उनकी मान्यता है कि, 'कुछ विद्वान ग़ज़ल का सम्बन्ध अरबी के ही अन्य शब्द 'ग़ज़ाल' से मानते हैं जिसका अर्थ है - मृग। अतःयह हो सकता है कि हिरन जैसे नेत्रोंवाली सुंदरियों के सम्बन्ध में लिखी गई छन्दोमय प्रेम कवितायें ही ग़ज़ल की संज्ञा से अभिहित की जाने लगी हो। परन्तु ग़ज़ल का व्युत्पत्ति विषयक ग़ज़ाल या मृग से जोड़ना समीचीन नहीं प्रतीत होता, क्योंकि भारत में मृग के नेत्र सुंदरता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अवश्य ही दिखाई देते हैं जब कि अरब या ईरान में नरगिसी नेत्र को महत्त्व दिया जाता है, अतः यह तथ्य भ्रांतिपूर्ण प्रतीत होता है। " [2]

इसप्रकार सरदार मुजावरजी और डॉ. रोहिताश्व अस्थानाजी के मत में अंतर पाया जाता है। उनके अलावा और भी विद्वानों ने ग़ज़ल शब्द का अर्थ बताने का प्रयास किया हैं। इनके अलावा अन्य विद्वानों की ग़ज़ल के बारे में विचारश्रेणी निम्न प्रकार की पायी जाती है -

" 'ग़ज़ल की व्युत्पात्ति के सम्बन्ध में एक और विचार यह भी है कि 'अरबी भाषा' में 'कसीदा' नामक एक काव्य विधा है। कसीदा से पहले एक छोटा - सा दो या चार पंक्तियों का प्रणयगीत कहने की परम्परा थी। इन पंक्तियों को 'तश्बीब' कहा जाता था। अरबों ने इस्लाम को कबूल किया और ईशन पर कब्जा किया। लड़ाई के बाद सांस्कृतिक लेन - देन में अरबों का कसीदा ईशन गया है और देखते - देखते फारसी कवियों में खूब मशहूर हुआ। फारसी कवि जो सौंदर्योपासक थे, विद्वान ये, अनुभवी थे और जीवन के हर पहलू को परखते थे कसीदा के 'तश्बीब' पर फिदा हो गये। उन्होंने 'तश्बीब' को एक अलग काव्य - विधा माना और अपनी प्रतिभा से समृध्द बनाया। इसी काव्य-विधा को आज हम लोग 'ग़ज़ल' नाम से पुकारते हैं।'

सूर्यप्रकाश शर्मा 'ग़ज़ल' की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखते हैं - 'एक किंवदंती के अनुसार अरब में 'ग़ज़ल' नाम का एक आदमी था जिसने अपनी सारी उम्र इश्क करने में बिता दी, उसके बारे में यह प्रचलित है कि वह हमेशा इश्क

और हुस्न की बातें ही किया करता था और अपनी बातों को कलात्मक ढंग से कहने में उस्ताद था। कम - से - कम शब्दों में अधिक प्रभाव उत्पन्न करने हेतु वह शेर कहता था इसी आधार पर सम्भवतः इश्क और हुस्न का जिक्र करने वाली कविता को 'ग़ज़ल' की संज्ञा दी जाने लगी।" [3]

उपर्युक्त विचारों को देखने के पश्चात हम इतना जान गये है कि, ग़ज़ल में प्रायःप्रेम की अभिव्यक्ति रहती है। साथ ही इस काव्य में दर्द की प्रधानता रहती है। इसी आशय को लेकर विविध विद्वानों द्वारा अपने मत - मतांतर प्रकट किए हैं। मगर सभी के विचारों का मतीतार्थ यही निकलता है कि, ग़ज़ल एक प्रेमकाव्य है। विरहानुभूति इसका आधारस्तंभ माना जाएगा। और नारी की कोमलता, सुंदरता का वर्णन इसमें प्रतीकों के माध्यम से किया जाता है। साथ ही, और कौन-कौनसीं बातें ग़ज़ल में आती हैं, यह आगे देखने को मिलेगा।

3.1.2 ग़ज़ल की परिभाषा :-

" खूब लिखी जा रही हैं इधर हिंदी में ग़ज़लें, और थोक के भाव में कुकुरमुत्तों की तरह उग रहे हैं हिंदी ग़ज़लकार। आज नए उगने वाले पाँच हिंदी कवियों में चार हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में जोर आजमाइश कर रहे हैं। शुभ सूचक है यह, साथ ही इसका प्रमाण भी कि हिंदी ग़ज़ल लोकप्रियता के शिखर पर है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि जो उलटा - सीधा बन पड़ा, लिख दिया, बहर और वजन से कोई लेना - देना नहीं; हिंदी ग़ज़ल के मिज़ाज एवं संस्कार को समझे बगैर इस तरफ हाथ - पैर मारना और बेसिर - पैर की, लचर कथ्य एवं लचर शिल्प के साथ तथाकथित हिंदी ग़ज़लें परोसना, हिंदी ग़ज़ल के साथ घोर अन्याय ही होगा। हमें हिंदी ग़ज़ल की मानसिकता को ध्यान में रखकर ही इसके निर्माण की प्रक्रिया का द्वार खटखटाना है। " [4]

" यह तो निर्विवाद है कि ग़ज़ल काव्य की सबसे अधिक लोकरंजक एवं लोकप्रिय विधा रही है। गिनेचुने शब्दों में अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का यह एक सशस्त्र एवं प्रभावी माध्यम है। ग़ज़ल को उसके संगीत पक्ष ने और भी निखार दिया है। ग़ज़ल को परिभाषित करने का प्रयास शब्दकोशों, साहित्यकोशों एवं विद्वानों द्वारा किया गया है। अतः ग़ज़ल के स्वरूप को जानने - समझने के लिए ग़ज़ल की विभिन्न परिभाषाओं का अध्ययन अधिक समीचीन सिध्द होगा। " [5]

'ग़ज़ल' इस विधा का भारी मात्रा में विकास हो रहा है। ऐसे में श्रेष्ठ रचनाकारों के साथ ही कुछ बेतुके रचनाकार भी नजर में आने लगे हैं। इस कारण ग़ज़ल को जानने के बाद ही 'ग़ज़ल' का निर्माण करें, यह सुझाव अशोक अंजुम जी ने दिया है। साथ ही 'ग़ज़ल' का जमाना होने के कारण ग़ज़ल को समझना जरूरी है। और ग़ज़ल समझने के लिए विभिन्न परिभाषाओं का अध्ययन आवश्यक है। इसीलिए हम अब ग़ज़ल की परिभाषाएँ देखेंगे -

3.1.2.1 ग़ज़ल की कोशगत परिभाषाएँ -

" 'नालन्दा विशाल शब्दसागर' में ग़ज़ल के बारे में लिखा है कि, 'फारसी और उर्दू में श्रृंगाररस की कविता।'

'बृहत हिन्दी कोश' के अनुसार 'फारसी उर्दू में मुक्तक काव्य का एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है।

'हिन्दी साहित्य कोश' (भाग - 1) में ग़ज़ल के विषय में लिखा है, 'ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है - नारियों के प्रेम की बातें करना।'

'उर्दू - हिन्दी शब्दकोश' के अनुसार, 'प्रेमिका से वार्तालाप, उर्दू - फारसी कविता का एक प्रकार विशेष जिसमें प्रायः 5 से 11 शेर होते हैं। सारे शेर होते हैं। सारे शेर एक ही रदीफ और काफिए में होते हैं और हर शेर का मज्मून अलग होता है, पहला शेर 'मत्ला' कहलाता है जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रास होते हैं, और अंतिम शेर 'मक्ता' होता है जिसमें शाईर अपना उपनाम लाता है।'

'उर्दू - मराठी शब्दकोश' की दृष्टि से ग़ज़ल का अर्थ है, प्रियतमेशी प्रीतीच्या व जवानीच्या गोष्टी बोलणे, प्रेमपत्राशी गुजगोष्टी करणे व खेळणे, उर्दू-फारसी कवितेचा एक प्रकार'। "[6]

"Classical Defination of Ghazal - Ghazal in short,is a collection of Sher's which follow the rules of 'Matla', 'Maqta', 'Beher', 'Kaafiyaa' and 'Radif'."[7]

कोशों में होनेवाली ग़ज़ल की परिभाषा देखने के पश्चात ग़ज़ल के संबंध में अन्य विद्वानों के मत जानना आवश्यक है। उनके मत जानने के पश्चात हम प्रमुख विद्वानों द्वारा की गई ग़ज़ल की परिभाषाएँ देखेंगे।

"अब ग़ज़ल परंपरागत प्रेमपरक विषयों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है वरन् इसने सामयिक संदर्भों, जीवन की विसंगतियों व भिन्न - भिन्न रूपों को स्वयं से जोड़ा है। अधिकांश समकालीन हिंदी ग़ज़लें रोजी - रोटी की तलाश में निकले आम आदमी के दर्द की दास्तान हैं, ये सीधे - सीधे आम आदमी से संवाद करती हैं। यदा - कदा जीवन की विसंगतियों से हिंदी ग़ज़लकार निराश भी होता है और जिंदगी को एक सजा का दर्जा दे बैठता है -

रस ओर हैं अँधेरे ऐसे में क्या सुनाएँ,
भयभीत हैं सवेरे ऐसे में क्या सुनाएँ।
सारे चमन में डाले वीरानियों ने डेरे,
वीराज हैं बसेरे ऐसे में क्या सुनाएँ।

किंतु स्थिती इतनी भयावह है नहीं, इसीलिए आशावादी दृष्टिकोण को वज़न देते हुए डॉ. शेरजंग गर्ग कहते हैं -

नाउम्मीदी से लाख बेहतर है,
एक उम्मीद दाग़दार सही।
वक़्त की त्यौरियाँ भी उतरेंगी।
और थोड़ा - सा इंतज़ार सही।

परिस्थितियाँ कैसी भी हों यदि हौसला है तो निश्चित ही मंज़िलें कदम चूमने को प्रस्तुत होंगी। सत्यपाल सक्सेना के अनुसार -

कैसे - कैसे हौसले मौसम परों में बो गया,
आसमाँ मेरी उडानों के लिए कम हो गया।" [8]

ग़ज़ल के बारे में विद्वानों के मत जानने के पश्चात ग़ज़ल के इतिहास पर थोड़ासा प्रकाश डालना आवश्यक जान पड़ता है। अतः एक नजर ग़ज़ल के अतीत पर -

" Ghazal originated in Iran in the 10th century A. D. It grew from the Persian qasida, which in verse from had come to Iran from Arabia. The qasida was a panegyric written in praise of the emperor or his noblemen. The part of the qasida called tashbib got detached and developed in due course of time into the ghazal. Whereas the qasida sometimes ran into as many as 100 couplets or more in monorhyme, the ghazal seldom exceeded twelve, and settled down to an average of seven. Because of its comparative brevity and concentration, its thematic variety and rich suggestiveness, the ghazal soon eclipsed the qasida and became the most popular from of poetry in Iran. " [9]

3.1.2.2 विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में ग़ज़ल -

" ग़ज़ल के सम्बन्ध में प्रो. ख्वाजा अहमद फारूकी ने कहा है - 'ग़ज़ल के माने उस कराह के भी है जो ग़िज़ाल (हिरन) तीर चुभने के बाद बेकसी के आलम में निकलता है। इसलिए ग़ज़ल में दुनिया की नापायदारी और दर्दमंदी का अक्सर जिक्र किया गया है। "

पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने ग़ज़ल का अर्थ जवानी का हाल बयान करना अथवा माशूक की संगति और इश्क का जिक्र करना इस बातं की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि 'एक ग़ज़ल में प्रेम के भिन्न - भिन्न भावों के शेर लाने का नियम रखा गया है। किसी शेर में आशिक अपनी मनोवेदना प्रकट करता है, जिससे माशूक पर उसका कुछ प्रभाव पड़े। किसी शेर में वह माशूक की प्रशंसा करता है जिससे वह प्रसन्न हो। किसी शेर में वह माशूक की वफ़ा और ज़फ़ा का जिक्र करता है और किसी में रकीब की शिकायत करता है। मतलब यह कि जिस बात के कहने से माशूक के प्रसन्न होने या और कोई खास नतीजा मिलने की आशा होती है, वही बातें ग़ज़ल में आती हैं। " [10]

" भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से विचार करें तो आसानी से कहा जा सकता है कि इस दिशा में सबसे पहला व महत्वपूर्ण प्रयास त्रिलोचन शास्त्री के बाद दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में मिलता है। उन्होंने आम बोलचाल की भाषा को काव्य भाषा में ढालने का प्रयास किया है। यद्यपि कहीं - कहीं उसमें भी स्खलन मिलता है, फिर भी यह कहा जा सकता है कि आज की हिंदी भाषा की ग़ज़लों का विवेचन और निर्धारण दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों से ही किया जाना अधिक उचित

है। आज शेरजंग गर्ग, सूर्यभानु गुप्त, विनोद तिवारी, रामकुमार कृषक, माधव मधुकर, डॉ. हनुमन्त नायडू, डॉ. कुँवर बेचैन, जहीर कुरेशी, गोपी वल्लभ, सत्यनारायण, डॉ. उमाशंकर तिवारी, अमरनाथ श्रीवास्तव तथा कैलाश गौतम आदि की ग़ज़लें हिंदी ग़ज़ल की कहन को हिंदी कविता की प्रकृति में ढालने की कोशिश ही नहीं कर रही हैं वल्कि उसकी भाषा के मानकीकरण की दिशा में भी सार्थक हस्तक्षेप कर रही हैं।''[11]

" मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' लिखते हैं, 'ग़ज़ल' में, जैसा कि विदित है, किसी विशेष विषय का क्रमबध्द वर्णन नहीं होता, अपितृ अलग - अलग विचार अलग - अलग पदों में व्यक्त किये जाते हैं। अपने वर्तमान रूप में ग़ज़ल का प्रचलन पहले ईरान में और कोई डेढ़ सौ वर्ष से भारत में हुआ है। यद्यपि मूलतः ग़ज़ल की रचना, जैसा कि 'ग़ज़ल' शब्द से प्रकट है केवल प्रेम - सम्बन्धी विषयों की अभिव्यक्ति के लिए हुई थी, किन्तु बहुत दिनों के बाद उसका यह रूप सुरक्षित न रह सका। ईरान में प्रायः और भारत में कुछ कवि ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने ग़ज़ल में प्रेम-विषयों के साथ आध्यात्मिक और नैतिक विषयों का भी समावेश किया है।'

डॉ. नगेन्द्र का मत है कि 'ग़ज़ल उर्दू काव्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध और सरस भेद है। उसका स्थायी भाव प्रेम है जिसमें रहस्यानुभूति, मस्ती, रिन्दी, धार्मिक विद्रोह आदि भावनाएँ संचारी रूप से ओत - प्रोत रहती हैं। विषय के अनुरूप एक विशिष्ट काव्यरूप भी है जो मतला, मक्ता, गिरह, काफिया और रदीफ में परिबध्द रहता है।'

उर्दू के प्रसिध्द शायर फिराक गोरखपुरी ने ग़ज़ल के संदर्भ में लिखा है, 'जब कोई शिकारी जंगल में कुत्तों के साथ हिरन (ग़ज़ाला) का पीछा करता है और हिरन भागते - भागते किसी झाड़ी में फँस जाता है जहाँ से वह निकल नहीं सकता, उस समय उसके कंठ से एक दर्द भरी आवाज निकलती है, उसी कारण स्वर को ग़ज़ल कहते हैं। ''[12]

इसप्रकार से ख्वाजा अहमद फ़ारूकी, पं. रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. नगेन्द्र और मौलाना अल्ताफ हुसैनजी की व्याख्याएँ हैं। कुछ विद्वानों के द्वारा ग़ज़ल के उदाहरण दिये गए हैं -

"काँच निर्मित घरों के क्या कहने,
भूर - भरे पत्थरों के क्या कहने। - शेरजंग गर्ग

रास्तों के घुमाव देख लिये,
कितने-कितने बहाव देख लिये। - विनोद तिवारी

कुछ तेरे कुछ मेरे हैं,
दुख-सुख साँझ - सवेरे हैं। - रामकुमार कृषक

अभावों के उड़नदस्ते पकड़ पाए नहीं इनको,
हमीं को मारकर कंधा हमारी चाहतें गुज़रीं। - पुरूषोत्तम प्रतीक

न लूँगा साथ उसे आग बेच दी जिसने,
बिगाड़ देगा सफ़र मेरा उम्र भर के लिए। - रमेश रंजक

मुझसे मत पूछिए किस हाल का सपना देखा,
मैंने टूटी - सी किसी डाल का सपना देखा। - कुँवर वेचैन

झाँकता है कौन भीतर के कुएँ में,
मित्रताएँ सिर्फ़ बाहर झाँकती हैं। - जहीर कुरेशी

कहीं रेशम कहीं खादी है प्यारे,
इसी का नाम आज़ादी है प्यारे। - भवानी शंकर

यह ज़रूरी नहीं गगन छू लो,
रास्ते से ही उठा लो सपने। - अमी गौड़

अपनी आँखें जब महाजन को चुका दीं व्याज में,
रोशनी का तब हमें भावार्थ समझाया गया। - ज्ञानप्रकाश विवेक "[13]

" अर्शद जमाल के मतानुसार, 'ग़ज़ल का मतलब है औरतों से अथवा औरतों के बारे में बातचीत करना। यह भी कहा जा सकता है कि ग़ज़ल का सर्व - साधारण अर्थ है माशूक से बातचीत का माध्यम।

अयोध्याप्रसाद गोयलीय के अनुसार, 'ग़ज़ल का अर्थ है इश्किया अशआर कहना, औरतों का वर्णन करना। यानी वह कविता जिसमें वस्ल (मिलन), फिराक (विरह), इश्क (प्रेम), इश्तयाक (चाहत), हसरत (कामना), चाल (निशना), का वर्णन हो।'

विभिन्न विद्वानों ने ग़ज़ल को परिभाषित करते हुए इसे 'दर्द भरी दास्तान', 'आशिक की मनोवेदना', 'माशूक की वफ़ा और जफ़ा', 'स्थायीभाव प्रेम', 'प्रेम के साथ आध्यात्मिकता का स्पर्श', 'दर्दभरी आवाज', 'मिलन, विरह, प्रेम, चाहत, कामना, निराशा की कविता' माना है और उसके शिल्प की ओर भी संकेत किया है। परन्तु किसी भी परिभाषा में ग़ज़ल के सम्पूर्ण स्वरूप का दिग्दर्शन नहीं हो पाया है। निष्कर्षतः समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखते हुए हम कह सकते हैं कि ग़ज़ल वह गेयात्मक या लयात्मक मुक्तक काव्य विधा है, जिसमें प्रेम की विभिन्न स्थितियों और परिणामों का सरस एवं प्रभावशाली वर्णन होता है और जिसका अपना एक शिल्प-विधान होता है। " [14]

अब डॉ. मधु खराटे जी द्वारा की गई व्याख्या ही सबसे सही जान पडती है। उन्होनें प्रेम के साथ ही गेयात्मक या लयात्मक मुक्तक काव्य विधा कहकर रचना को विस्तारपूर्वक समझाया है। तथा प्रेम की विभिन्न स्थितियों और परिणामों का सरस एवं प्रभावशाली वर्णन कहकर भावनाओं को भी व्यक्त करने का प्रयास किया है।

3.1.3 ग़ज़ल के अंग :-

शेर, मिसका, काफिया, रदीफ, मतला और मक्ता यह ग़ज़ल के अंग हैं।

3.1.3.1 शेर :-

" शेर अरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ केश है। जिस प्रकार किसी युवती की सुन्दरता की अभिवृध्दि में केश सहायक होते हैं, वैसे ही किसी ग़ज़ल के भाव-सौन्दर्य में निखार शेरों के माध्यम से आता है। दो-दो मिसरों का अर्थपूर्ण होकर एक स्वतन्त्र भाव के अभिव्यक्ति की क्षमता रखता है। उदाहरण-"[15]

"हम तो समझे थे तुम आये तो बहार आयेगी
ये न सोचा था कि फूलों में ही ठन जायेगी।
रोज़ ही होते गये भक्त अगर उच्छृंखल
डर है मन्दिर में न सूरत ही नज़र आयेगी।
तुम जहाँ पहुँचे हो वो ऐसी जगह है यारो।
इक ज़रा भूल से तस्वीर बदल जायेगी।
अपने रंग-रूप प' इतना तो न इतरा गोरी
जुल्फ़ सोने की ये चाँदी में बदल जायेगी।
चूड़ियाँ करती है जैसे किसी सिन्दूर की याद
यूँ ही 'नीरज' की कभी याद तुम्हें आयेगी।" [16]

" What is a Sher ?

It's a poem of two lines. This defination is deceptively simple. Please, note that, every Sher is a poem in itself ! A Sher does not need, anything around it,to convey the message. All the stanzas in our example are independent poems, Sher's. " [17]

" शेर में वर्णित विषयवस्तु का स्पष्टता, प्रौढ़ता, अर्थपूर्णता, मुहावराबंदी आदि गुणों से युक्त होना तथा अनमेल, विक्षेप, कुरूपता, अश्लीलता, उलझाव, अनावश्यक आदि दोषों से मुक्त होना भी आवश्यक होता है।

ग़ज़ल में कितने शेर होने चाहिए इस सम्बन्ध में मत - भिन्नता है। साधारणतः ग़ज़ल में शेरों की संख्या कम से कम पाँच और ज्यादा से ज्यादा ग्यारह मानी गयी है। लेकिन पुराने शायरों ने कम-से-कम तीन और अधिक से अधिक पच्चीस शेर तक की ग़ज़लें कही हैं। शेर की संख्या के सम्बन्ध में 'हिन्दी साहित्य कोश' में लिखा है, पाँच से सत्रह शेरों के संग्रह को ग़ज़ल कहते हैं, परन्तु इस संख्या के पालन में उर्दू में कोई खास पाबंदी नहीं है। बहुत से शायरों ने अपनी ग़ज़लों में सत्रह से ज्यादा शेर भी रखे हैं। " [18]

3.1.3.2 मिसरा :-

" शेर की प्रत्येक पंक्ति को मिसरा कहते है। दो मिसरें से मिलकर एक शेर का गठन होता है। निचे के शेर की दोनों पंक्तियाँ दो स्वतन्त्र मिसरे हैं। डॉ. अर्शद जमाल के मतानूसार, 'शेर के पहले मिस्रे को 'मिसर - ए - ऊला' और दूसरे को 'मिसर - ए - सानी' कहते हैं। " [19]

"पिया की बाँह में सिमटी है इस तरह गोरी
सभंग श्लेष हुआ है अभंग फिर यारो !" [20]

3.1.3.3 काफिया :-

" काफिया शब्द 'फ्कू' से बना है, जिसका अर्थ है - पुनः - पुनः, बार - बार। अर्थात् वह अक्षर या अक्षर समूह जो बार बार शेरों में आकर शेरों को ग़ज़ल के सूत्र में बाँधता है, उसे काफिया कहते हैं।

डॉ. नरेश ने काफिये को परिभाषित करते हुए लिखा है, 'ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पहले आने वाले उन शब्दों को काफिया कहते हैं, जिनके अन्तिम एक या एकाधिक अक्षर स्थायी होते हैं और उनसे पूर्व का अक्षर चपल होता है।'

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना के मतानुसार 'काफिया का तात्पर्य तुक से होता है। ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पहले जो अन्त्यानुप्रास - युक्त शब्द आते हैं और जिनका प्रयोग तुक मिलाने की दृष्टि से किया जाता है, काफिया कहलाते हैं। " [21]

"बात अब करते हैं क़तरे भी समन्दर की तरह।
लोग ईमान बदलते हैं कलेण्डर की तरह।
बस वही लोग बचा सकते हैं इस कश्ती को
डूब सकते हैं जो मँझधार में लंगर की तरह।
मैंने ख़ुशबू-सा बसाया था जिसे तन-मन से
मेरे पहलू में वही बैठ है खंजर की तरह।
मेरा दिल झील के पानी की तरह काँपा था
तुमने वो बात उछाली थी जो कंकर की तरह।" [22]

उपर्युक्त ग़ज़ल में समन्दर, कलेण्डर, लंगर, खंजर, कंकर काफिये हैं। इनमें 'अर'स्थायी अक्षर हैं और उससे पहले के सारे अक्षर चपल अक्षर हैं।

" What is 'Kaafiyaa' ?

'Kaafiyaa' is the rhyming pattern which all the words before 'Radif' MUST have. Ghazal is a collection of Sher's of same 'Beher', ending in same 'Radif' and having same 'Kaafiyaa'. That's the reason, why "Yeh mera dewanapan hai" etc. are NOT Ghazals. There is no common thing which can be called 'Kaafiyaa' and 'Radif'." [23]

3.1.3.4 रदीफ :-

" शब्दकोश में रदीफ का अर्थ है - 'पीछे चलनेवाली।' पारिभाषिक रूप में वह अक्षर, शब्द या शब्द - समूह रदीफ होती है, जो किसी ग़ज़ल के प्रत्येक शेर में, काफिये के पीछे लगातार दोहरायी जाती है।

अर्थात रदीफ काफिये के बाद आती है और वह प्रत्येक शेर में अपनी जगह पर स्थिर रहती है, कभी बदलती नहीं। अतः ग़ज़ल के शेरों के अन्त में जिन शब्द - समूह की या शब्द की पुनरावृत्ति पाई जाती है, उसे रदीफ कहते हैं। " [24]

"रंग ऋतु के बदल गये होंगे
वो जिधर से निकल गये होंगे।
रात बाज़ार में अँधेरा था
खोटे सिक्के भी चल गये होंगे।
तुमसे होकर जुदा सभी आँसू
गीतों - ग़ज़लों में ढल गये होंगे।
वो नज़र जिस तरफ़ उठी होगी
गिरने वाले सँभल गये होंगे।
जिक्र नीरज का जब हुआ होगा
कितने ही लोग जल गये होंगे।" [25]

इस ग़ज़ल में 'गये होंगे' शब्द - समूह रदीफ के रूप में आया है। जिन ग़ज़लों में रदीफ नहीं होती, उन्हें 'गैर - मुरद्दफ ग़ज़ल' कहते हैं।

" What is 'Radif' ?

In a Ghazal, second line of all the Sher's MUST end with the SAME word's. This repeating common words is the 'Radif'. " [26]

3.1.3.5 मतला :-

" ग़ज़ल का पहला शेर मतला कहलाता है। जिसके दोनों मिसरों में रदीफ और काफिया होती है। जबकि अन्य शेरों के दूसरे मिसरे में ही यह विशेषता पाई जाती है।

'उर्दू - हिन्दी शब्दकोश' में 'मतला' के सम्बन्ध में लिखा है कि ग़ज़ल का पहला शेर जिसके दोनो मिस्रे सानुप्रास होते हैं।

ग़ज़ल का प्रारम्भिक शेर होने के कारण ही मतले में 'निकलने की जगह' 'उदय होने का स्थान' अथवा 'भावोदय' जैसे अर्थ समाहित हो गये हैं। मतले का सही परिचय उदाहरण द्वारा ही हो सकेगा - " [27]

"जब चले जाएँगे हम लौटके सावन की तरह,
याद आएँगे प्रथम प्यार के चुम्बन की तरह।" [28]

इस शेर की दोनों पंक्तियों में 'सावन', 'चुम्बन' काफिया तथा 'की तरह' रदीफ दिखाई देता है। दोनों पंक्तियों में तुक मिलने से शेर ग़ज़ल का मतला है। ग़ज़ल के दूसरे शेर के दोनों मिस्रों में काफिया और रदीफ होनेपर उन्हें 'हुस्न - ए - मतला' या 'मतला - ए - सानी' कहा जाएगा।

"What is 'Matla' ?

The first Sher in the Ghazal MUST have 'Radif' in its both lines. This Sher is clled 'Matla' of the Ghazal and the Ghazal is usually known after its 'Matla'. There can be more than one 'Matla' in a Ghazal . In such case the second one is called 'Matla - e - saani' or 'Husn - e - matla'. " [29]

3.1.3.6 मक्ता :-

" ग़ज़ल के अंतिम शेर को मक्ता कहते हैं। इसमें कवि के 'तखल्लूस' अर्थात् कविनाम या उपनाम का प्रयोग होता है। डॉ. अर्शद जमाल के मतानुसार - 'ग़ज़ल के आखिरी शेर को जिसमें शायर का नाम अथवा उपनाम हो उसे 'मक्ता' कहते हैं। अगर नाम न हो तो उसे केवल ग़ज़ल का 'आखिरी शेर' ही कहा जाता है।' मक्ते में भाव प्रकाशन की क्षमता अपने चरमोत्कर्ष पर होती है -" [30]

"है उसके वास्ते पागल सली अब तक
कोई तो बात है नीरज के गुनगुनाने में।" [31]

इस शेर में 'नीरज' तखल्लुस का प्रयोग हुआ है। इसीकारण यह मक्ता है।

" What is 'Maqta' ?

A Shayar usually has an alias ie. 'takhallus' e.g. Mirza Asadullakhan used 'Ghalib' as his 'takhallus' and is known by that. " [32]

" हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण उसका आम आदमी से जुड़ना ही है। वस्तुतः कविता की सार्थकता तभी है जब उसमें आम आदमी का जीवन प्रतिबिंबित हो सके। इस तथ्य को हिंदी ग़ज़लकारों ने आत्मसात किया है। उन्होंने प्रायः उर्दू - फारसी की परंपरागत प्रेमपरक भावभूमि से ऊपर उठकर आधुनिक विषम परिस्थितियों से जूझते आम आदमी के जीवन को अपना वर्ण्य विषय बनाया है। हमारे देश की 80 टक्के से अधिक जनसंख्या आम आदमी की श्रेणी में आती है। आम आदमी समाज का अभिन्न अंग है। वह समाज की इकाई भी है। आधुनिक समाज विभिन्न दृष्टियों से अलग-अलग वर्गों में बँट गया है। राजनीतिक प्रदूषण भी समाज में बुरी तरह फैल गया है। अतः आदमी का राजनीति

से प्रभावित होना स्वाभाविक ही है। हर आदमी अपने निहित स्वार्थों को लेकर कहीं - न - कहीं किसी - न - किसी प्रकार राजनिती से जुड़ा हुआ है। कहीं भी चार आदमी यदि मिल - बैठकर बात कर रहे हों तो उनमें राजनीतिक चेतना से संबध्द होता जा रहा है। दुर्भाग्य यह है कि, आज राजनिती में अपराधीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। सत्ता और कुर्सी के लोभ ने आम आदमी को मंदीर - मस्जिद, मंडल - कमंडल और आरक्षण जैसे खेमों में बाँट दिया है। हिंसा, अलगाववाद, आतंकवाद जैसे मुद्दे कुत्सित राजनीति के ही दुष्परिणाम हैं।

ऐसे विषाक्त राजनीतिक परिवेश में साँस लेते हुए आम आदमी के दिलों में राजनीतिक चेतना जगाने में हमारी हिंदी ग़ज़लें पूर्णतया सफल हुई हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में अपनी व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक पीड़ा को व्यक्त करने के लिए नई कविता के अनेक समर्थ हस्ताक्षरों ने हिंदी ग़ज़ल की विधा को अपनाया। " [33]

3.1.4 ग़ज़ल की भाषा :-

" भाषा भावों एवं विचारों की वाहक होती है। वैसे भी ग़ज़ल की प्रभावोत्पादकता भाषा पर अधिक निर्भर होती है। ग़ज़ल की भाषा में संप्रेषण क्षमता का विशेष महत्व होता है। कम - से कम शब्दों में ग़ज़लकार अपने भावों एवं विचारों को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने की है सियम रखता है।

ग़ज़ल के लिए भाषा में सरलता, सहजता, सरसता एवं प्रभावोत्पादकता आवश्यक गुण हैं। ग़ज़ल भाषा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' ने भी इसी बात की पुष्टी की है, 'ग़ज़ल में आवश्यक है कि अन्य काव्य-रूपों की अपेक्षा सादगी और सरलता का अधिक ध्यान रखा जाय। " [34]

" समकालीन हिंदी ग़ज़ल में कथ्य के धरातल पर कई पड़ाव आए हैं। वर्तमान समय में कथ्य के बुनियादी मूल्यों में जो बदलाव आए हैं, उनका समसामायिक समाज की रचना प्रक्रिया से गहरा सरोकार है। दरअसल हिंदी ग़ज़ल ने कथ्य की ज़मीन पर निरंतर जूझते हुए अपने लिए एक नई जीवंत भाषा की तलाश की जिसमें समकालीन समय की सच्चाइयों के साथ सीधा साक्षात्कार था, जिसने कविता को इतिहास की अंधी सुरंग से निकालकर संवेदना के बदलाव की आकर्षक कथा दी।... वह तमाम दस्तावेज़ जो इस अपंग दौर के हैं, उन्हें निडरता और सच्चाई की एक जीवंत भाषा देता है। इसकी विषयवस्तु भाषा के माध्यम को अधिक सक्षम और उत्तरदायी बनाने की कोशिश करती है। हिंदी ग़ज़ल भाषा के पुराने मुहावरे एवं उसकी ध्वनियों एवं रचाव को तोड़कर अपनी नई प्रतिध्वनियाँ खड़ी करती है। " [35]

ग़ज़ल की भाषा में प्रभाव, वज़न का महत्व बताते हुए मधु खराटेजी लिखते हैं- " फारसी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि रौदकी से लेकर सादी शीराजी तथा परवर्ती कवियों ने फारसी भाषा में ग़ज़लें लिखी है, किन्तु उस समय के ग़ज़लों की भाषा बड़ी जटिल है। भारी - भरकम एवं क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग के कारण उस युग की ग़ज़लों की भाषा सर्वसाधारण के लिए नहीं रह गयी। यही कारण है कि फारसी ग़ज़लें आम आदमी में लोकप्रिय नहीं हो सकी। अतः ग़ज़ल की भाषा सरल एवं प्रवाहमय होना आवश्यक है।

ग़ज़ल की भाषा मुहावरेदार एवं प्रभावोत्पादक होनी चाहिए। मुहावरों एवं

कहावतों के कारण ग़ज़ल में रोचकता निर्माण होती है। " [36]

"कहानी बनके जिये हम तो इस ज़माने में
लगेंगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में।
गिरी हैं बिजलियाँ कुछ ऐसी चमन पर अपने
कि अब तो बच्चे भी डरते हैं मुस्कराने में।" [37]

" ग़ज़ल भाषा का प्रतीकात्मक होना भी आवश्यक है। क्योंकि प्रतीकात्मकता ग़ज़ल की महत्वपूर्ण विशेषता है। एक शेर में भावों की प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्ति हेतु प्रतीकों का प्रयोग नितान्त आवश्यक है। इतना ही नहीं तो ग़ज़ल - भाषा का बिम्बात्मक होना भी जरूरी है।

ग़ज़ल में अलंकारों का प्रयोग भी अपेक्षित है, किन्तु सहज रूप से। अलंकारिक भाषा से ग़ज़ल का सौंदर्य बढ़ जाता है। ग़ज़ल में व्यंग्यात्मकता भी जरूरी है। व्यंग्यात्मकता से ग़ज़ल में रोचकता निर्माण हो जाती है। व्यंग्य दोषों एवं कमजोरियों के प्रति ध्यानाकर्षण कराता है जिससे सुधार की प्रवृत्ति जाग्रत होती है, अतः ग़ज़ल की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए। उसमें प्रतीक, बिम्ब, व्यंग्य, कहावतों, मुहावरों एवं अलंकारों का उचित मात्रा में प्रयोग होना चाहिए। " [38]

इसप्रकार से हम जान गये हैं कि, ग़ज़ल की भाषा सरल, सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए। कहावतों, मुहावरों, अलंकारों, प्रतीक एवं बिम्ब का प्रयोग आवश्यक है। ग़ज़ल में अन्य काव्य - रूपों की अपेक्षा सादगी और सरलता का अधिक ध्यान रखना चाहिए।

3.1.5 ग़ज़ल का शिल्प - विधान :-

" प्रत्येक विधा का अपना एक रूप होता है जिससे उसकी एक अलग पहचान बनती है। अतः ग़ज़ल का भी अपना एक शिल्प - विधान है। इसीलिए हनुमंत नायडू ने कहा है, 'ग़ज़ल का अपना अलग ढाँचा है। उसी के आधार पर उसकी आधारभूत पहचान की जा सकती है। केवल भाषा या भाव से ग़ज़ल के रूप को नहीं पहचाना जा सकता। जहाँ ऐसा करने का यत्न होगा, गलती होगी।'

अतः ग़ज़ल के शिल्प - विधान के अन्तर्गत ग़ज़ल के अंग, भाषा, रसयोजना, अलंकार - विधान, बिम्ब एवं प्रतीकात्मकता, छंद - सृष्टि, गेयता आदि का अध्ययन प्रस्तुत है। " [39]

इनमें से ग़ज़ल के अंग और भाषा की जानकारी हम ले चुके हैं। अब रस योजना, अलंकार - विधान, बिम्ब एवं प्रतीकात्मकता, छंद सृष्टि और गेयता की जानकारी आगे दी है।

3.1.6 छंद-विधान :-

" जिस प्रकार हिन्दी की छंदबध्द कविता में विभिन्न छंदो का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार ग़ज़लों के लिए भी विभिन्न बहरें (छंद) सुनिश्चित की गयी है। इन्हें लयखंड भी कहते हैं। बहर में वर्ण, मात्रा, लय, गति एवं यति का ध्यान रखा जाता है।

उर्दू - फारसी की बहर को समझने के लिए 'अरकान' अर्थात् गण होते हैं। यह अरकान दस प्रकार के होते हैं - फऊलुन, फाइलून, मुस्तफइलुन, मफाइलुन, फाइलालुन,मुतुफाइलातुन,मुफतइलातुन,फऊलातुन,मफऊलात एवं मुसतफइलुन।" [40]

अब हम गण को समझने के लिए एक शेर को उदाहरण के तौर पर देखेंगे -

"महल से झोंपड़ी तक एकदम घुटती उदासी हैं,
किसी का पेट ख़ाली है किसी की रूह प्यासी है।

गणना	महल से झों	पड़ी तक ए	कदम घुटती	उदासी है
	मफाईलुन	मफाईलुन	मफाईलुन	मफाईलुन
	किसी का पे	ट ख़ाली है	किसी की रू	ह प्यासी है
	मफाईलुन	मफाईलुन	मफाईलुन	मफाईलुन

यह मतला ठीक है क्योंकि वज़्न के नीचे वज़्न है।" [41]

" इन अरकानों की निर्धारीत आवृत्तियों एवं निश्चित संयोग से विभिन्न बहारों का निर्माण होता है। उर्दू - फारसी छंद - शास्त्र में लगभग 37 बहरों का उल्लेख मिलता है, किन्तु प्रचलित और लोकप्रिय बहरों की संख्या 12 है - मुतकारिब, मुतदारिक, हज़ज़, रज़ज़, रमल, कामिल, मुजारिअ, मुक्तजिब, मुज्तस, मुसरह, सरीअ एवं खफ़ीफ। " [42]

नित्यानन्द 'तुषार' जी के अनुसार, " ग़ज़ल के ऊपर जो भी साहित्य मुझे मिला है उससे यह बात उभरकर सामने आती है कि ग़ज़ल की प्रमुख बहरें उन्नीस हैं। ये हैं -

1 खलील बिन अहमद की बहरें - 15 (721 ई. से 787 ई.)
2 अबुल हसन अखफस की बहर - 1
3 बजर चम्हर की बहर - 1
4 मौलाना नीशापुरी की बहर - 1
5 किसी अज्ञात व्यक्ति की बहर - 1

इन उन्नीस बहरों के नाम निम्नलिखित हैं -

1 - मुतदारिक,	2 - मुतकारिव,	3 - हज़ज,	4 - रज़ज़,
5 - रमल,	6 - कामिल,	7 - मुंसरिअ,	8 - मुजारअ,
9 - सरीअ,	10 - खफीफ,	11 - मुज्तस,	12 - मुक्तजब,

13 - तवील, 14 - मदीद, 15 - वसीत, 16 - वाफिर,
17 - जरीद, 18 - मुशाकिल, 19 - करीब। " [43]

" हिन्दी ग़ज़ल में उर्दू - फारसी के छंद - शास्त्र में वर्णित बहरों के अपनाने पर विशेष बल दिया गया है। यद्यपि बहुत से हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में हिन्दी के दोहा, मंदाक्रान्ता आदि छंदों को ही अपनाया है। हिन्दी ग़ज़लों में बहरों के नियमों के अनुपालन में भटकाव दिखाई देता है। हिन्दी ग़ज़लों में बहरों के नियमों के अनुपालन में भटकाव दिखाई देता है। हिन्दी के कई ग़ज़लकारों ने बहरों के नियम को न मानते हुए अपनी ग़ज़लों में केवल शेर, मतला, मक्ता, काफिया, रदीफ आदि का ही निर्वाह किया है। " [44]

" ग़ज़ल की अपनी शर्तें हैं। यह एक जटिल तकनीक वाली विधा है। ग़ज़ल के आवश्यक तत्व बहर, रदीफ़, काफ़िया है। बिना रदीफ़ के यदि कोई ग़ज़ल है तो कोई दोष नहीं है, ऐसी ग़ज़ल को 'ग़ज़ले ग़ैर मुरद्दफ़' कहा गया है। मगर बिना क़ाफ़िया कोई ग़ज़ल नहीं होती और जो चीज़ छुपी रहती है ग़ज़ल में, वह बहर है। मेरी दृष्टि में बहर ग़ज़ल का प्राण है। ग़ज़ल की साँस है बहर। बिना बहर की ग़ज़ल, ग़ज़ल नहीं कुछ और है। बहर वह आंतरिक संरचना है जिससे गेयता आती है तथा प्रवाह बनता है। " [45]

इसप्रकार ग़ज़ल के छंद - विधान के अंतर्गत बहुत सारी बाते आ जाती हैं। उनका ध्यान रखना आवश्यक है। अन्यतः ग़ज़ल का स्वरूप बदल जाता है।

3.1.7 अलंकार योजना :-

" अलंकार काव्य के सौन्दर्य में चार चाँद लगाते हैं। अतः ग़ज़लों में भी अलंकारों का प्रयोग परिलक्षित होता है। 'परम्परागत उर्दू ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में यद्यपि अलंकारों के प्रति उनका आग्रह नहीं रहा, तथापि कुछ अलंकार उनकी ग़ज़लों में स्वतः ही आ गए हैं। "

हिन्दी ग़ज़लकारों ने भी अलंकारों को सहज अभिव्यक्ति हेतु अपनाया है। हिन्दी ग़ज़लों में प्रमुख रूप से अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उपमा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास,मानवीकरण, पुनरूक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग दिखाई देता है। " [46]

"... कि दूर-दूर तलक एक भी दरख़्त न था,
तुम्हारे घर का सफ़र पहले इतना सख़्त न था।
हम इतने लीन थे तैयारियों में जाने की
वो सामने थे, उन्हें देखने का वक़्त न था।" [47]

" उपमा अलंकार का प्रयोग उर्दू ग़ज़लों में विशेष रूप से परिलक्षित होता है और यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि उर्दू ग़ज़लों में नारी सौन्दर्य का वर्णन प्रधान कथ्य रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य अलंकारों को भी प्रयुक्त किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि ग़ज़लों में प्रयुक्त अलंकार चमत्कार निर्माण के लिए न होकर काव्य सौन्दर्य-विधान के लिए ही है।

निष्कर्षतः ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में अलंकारों का प्रयोग अनायास किया है। उन्होंने अलंकारों का प्रयोग पांडित्य - प्रदर्शन के लिए नहीं किया, बल्कि अभिव्यक्ति के प्रवाह में स्वाभाविक रूप से अलंकार उनकी रचनाओं में सम्मिलित हो गये हैं। '' [48]

"शब्द झूठे हैं सभी सत्य - कथाओं की तरह
वक़्त बेशर्म है वेश्या की अदाओं की तरह।
प्यार के वास्ते प्यासा है ये दिल सदियों से
अब तो बरसो कोई सावन की घटाओं की तरह।" [49]

इसप्रकार अलंकारों का प्रयोग काव्य का सौंदर्य बढ़ाने के लिए किया जाता है। और काव्य - जगत् में अलंकारों को अनन्य साधारण महत्व दिया जात है।

3.1.8 रस - परिपाक :-

" भारतीय साहित्यशास्त्र में रस को काव्य की आत्मा माना गया है। क्योंकि रस के अभाव में कविता नीरस प्रतीत होती है। अतः रसहीन कविता श्रोता एवं उनके हृदय में उतर जाने की क्षमता रखती है, क्योंकि ग़ज़ल में रसानुभूति कराने का सामर्थ्य विद्यमान है। '' [50]

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ कुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमज़ान हो।
मज़हबी झगड़े ये अपने आप सब मिट जायेंगे,
और कुछ होकर न गर इन्सान बस इन्सान हो।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिन्दी के उर्दू का कोई दीवान हो।" [51]

" उर्दू - फारसी ग़ज़ल साहित्य सुरा - सुन्दरी एवं प्रेम - यौवन से परिपूर्ण होने के कारण श्रृंगार रस से ओतप्रोत है। 'उर्दू में श्रृंगार रस की प्रधानता है ही, इसके अतिरिक्त जहाँ प्रेमिका का डरावना चित्र प्रस्तुत होता है, वहाँ रोद्र, जहाँ उसकी मार - काट दिखाई जाती है, वहाँ वीभत्स, जहाँ प्रेमी का छटपटाना वर्णित है, वहाँ करूण, जहाँ कवि चुटकियाँ लेता है, वहाँ हास्य तथा जहाँ हुसैन का युद्ध - कौशल दिखाया जाता है (मर्सिया), वहाँ वीररस प्राप्त होता है। ''

हिन्दी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल को यथार्थवादी स्वर देते हुए उसे जन - चेतना से जोड़ने का प्रयत्न किया है। अतः हिन्दी ग़ज़लों में श्रृंगार रस का निरूपण कम हुआ है। हिन्दी ग़ज़लों में श्रृंगार रस के अतिरिक्त करूण, रौद्र, शांत आदि रस से सम्बन्धित शेर भी प्राप्त होते हैं। '' [52]

"अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये।
जिसकी ख़ुशबू से महक जाये पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।
मेरे दुख - दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाये।
जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये।" [53]

इसप्रकार हिंदी ग़ज़लकारों ने श्रृंगार रस के अलावा करूण, शांत, रौद्र आदि रसों का प्रयोग अपनी ग़ज़लों में किया है।

3.1.9 बिम्ब - विधान :-

" बिम्ब काव्य का महत्वपूर्ण तत्व है। इसका अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द है, जिसका अर्थ है - किसी पदार्थ को मूर्त बनाना। 'बिम्ब शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से 'छाया', 'प्रतिछाया' तथा 'अनुकृति' के लिए किया जाता है। आज इसका प्रयोग व्यापक है।'

बिम्ब के कारण मानसिक प्रत्यक्षीकरण एवं प्रभावात्मकता का निर्माण होता है। इसीलिए ग़ज़ल में भी बिम्ब का विशेष स्थान है। बिम्ब ग़ज़ल को उत्कृष्ट एवं सजीव बनाते हैं। अतः उत्तम ग़ज़ल लेखन के लिए सफल बिम्ब - विधान अत्यन्त आवश्यक है। " [54]

"बुझ जाये सरेशाम ही जैसे कोई चिराग़
कुछ यूँ' है शुरूआत मेरी दास्तान की।
ज्यों लूट लें कहार ही दुलहिन की पालकी
हालत यही है आजकल हिन्दोस्तान की।" [55]

इसप्रकार से ग़ज़ल में बिम्ब - विधान का महत्व स्पष्ट किया गया है।

3.1.10 प्रतीक - विधान :-

" काव्यात्मक अभिव्यक्ति में प्रतीकों का स्थान महत्वपूर्ण है। ग़ज़ल में भी प्रतीक - विधान की अनिवार्यता इसलिए है कि इसमें कम से कम शब्दों में गहन गंभीर भावों को अभिव्यक्त किया जाता है।

जहाँ तक प्रतीकों का प्रश्न है, उर्दू - फारसी ग़ज़ल में कफस, बहार, पतझड़, गुल, चमन, गुलशन, बिजली, संग, मय, मयखाना, मीनार आदि ईरानी सभ्यता के प्रतीकों का प्रयोग अपनी देवनागरी लिपि में लिखी ग़ज़लों में किया है। किन्तु आधुनिक हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में अधिकतर भारतीय परिवेश से सम्बन्धित पौराणिक एवं जन - जीवन से सम्बध्द प्रतीकों का प्रयोग किया है।" [56]

"डुबकर जिसमें उबर पाया न मैं जीवन - भर
एक आँसू का वो क़तरा तो समन्दर निकला।
जिन्दगी - भर मैं जिसे देखके इतराता रहा
मेरा सब रूप वो मिट्टी की धरोहर निकला ।" [57]

'निसंदेह आधुनिक काव्य - प्रतीकों पर फारसी और उर्दू के प्रतीकों का प्रभाव पड़ा है। हिन्दी ग़ज़ल अपने कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से अलग पहचान बना चुकी है, किन्तु उसकी कुछ रचनाओं में आज भी फारसी एवं उर्दू के प्रतीकों का प्रयोग हो ही रहा है।

ग़ज़लों में सार्वभौम, देशगत, परस्परागत, व्यक्तिगत, युग गत, भावात्मक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय, विचारात्मक, अन्योक्तिमूलक, रूपकात्मक, लक्षणामूलक आदि प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त नये प्रतिकों को भी अपनाया जाता है। प्रतीकों के कारण ग़ज़ल में वजन आ जाता है। अतः ग़ज़ल में प्रतीक - विधान का महत्वपूर्ण स्थान है। " [58]

इसप्रकार ग़ज़लों में प्रतीकों के प्रयोग से प्रसंग का वर्णन अधिक सजीव रूप में और यथार्थवादी जान पड़ता है। कई प्रतीक सौंदर्य की वृद्धि करने में सौ फिसदी यशस्वी हो जाते है। यही प्रतीक - विधान की सार्थकता मानी जाएगी।

"कुछ न तुम कह सके, कुछ न हम कह सके
वो मिलन का मुहूरत गुज़र यूँ गया
जब तलक हो अधर का अधर से मिलन
बीच में आँसुओं की नदी आ गई।" [59]

3.1.11 गेयता :-

"ग़ज़ल छंदोबध्द रचना होने के कारण गेय भी हैं। ग़ज़ल को तरन्नुम में भी पढ़ा जाता है और जब तक किसी रचना में गेयता के तत्व नहीं होंगे तब तक उसे तरन्नुम में पढ़ा ही नहीं जा सकता।

पशुपतिनाथ पाठक 'व्याकुल' के मतानूसार, 'गायन के क्षेत्र में तो ग़ज़ल का अपना एक विशेष स्थान है। मुख्य रूप से ग़ज़ल संगीत के गायन पक्ष की ही शैली है।' " [60]

"रंग ऋतु के बदल गये होंगे
वो जिधर से निकल गये होंगे।
रात बाजार में अंधेरा था
खोटे सिक्के भी चल गये होंगे।
तुमसे होकर जुदा सभी आँसू
गीतों-ग़ज़लों में ढ़ल गये होंगे।" [61]

" शास्त्रीय मान्यता के आधार पर ग़ज़ल गायिकी के तीन प्रकार माने गये है -

1. खुली ग़ज़ल :- इसे कुछ लोग महफिल की ग़ज़ल भी कहते हैं। इसमें ग़ज़ल का 'तरन्तुम - पक्ष' अधिक प्रबल होता है और गायक अपनी इच्छा से अपने गले और स्वर का अधिक से अधिक प्रयोग करके चमत्कार दिखाता है और श्रोताओं को मोहित करता है।

2. बंदिश की ग़ज़ल :- यह शैली उतनी अधिक स्वतंत्र तो नहीं है, जितनी अन्य ग़ज़ल शैलियाँ। यह सर्वाधिक लोकप्रिय शैली है। इस शैली में पूरी प्रस्तुति तालबध्द एवं सुनियोजित होती है।

3. कव्वाली शैली :- इस शैली में गायी जाने वाली ग़ज़लें कव्वाली बनाकर गयी जाती हैं। शब्दों का और कवित्वका इस शैली में बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन हो सकता है। "[62]

"जो कलंकित कभी नहीं होते
वो तो वन्दित कभी नहीं होते।
जिनकी घायल किया न काँटों ने
वो सुगन्धित कभी नहीं होते।
लोग करते न गर हमें बदनाम
हम तो चर्चित कभी नहीं होते।"[63]

" उपर्युक्त तीनों प्रकारों की ग़ज़लों का लेखन उर्दू - फारसी में हुआ है। उर्दू - फारसी ग़ज़लकारों ने विशेष कर बंदिश की ग़ज़लों का सृजन किया है किन्तु हिन्दी ग़ज़लकारों ने खुली ग़ज़लों का अधिक मात्रा में सृजन किया है। गेयता के कारण ही ग़ज़ल सर्वाधिक लोकप्रिय विधा रही है। गायन से सम्बध्द होने से उर्दू-फारसी की ग़ज़लों में 'ट' वर्ग की कर्णकटु ध्वनियों का प्रयोग निषिध्द है। "[64]

इसप्रकार ग़ज़ल में गेयता को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। क्योंकि गेयता के कारण ग़ज़ल का सौंदर्य और अधिक निखरता है तथा ग़ज़ल को लोकप्रियता का सम्मान प्राप्त होता है।

3.1.12 ग़ज़ल के प्रकार :-

ग़ज़ल के पाँच प्रकारों की जानकारी इसप्रकार से दी जायेगी -

" **1. मुकम्मिल ग़ज़ल** :- मुकम्मिल ग़ज़ल उस ग़ज़ल को कहते हैं, जो मतले से शुरू होकर मक्ते पर समाप्त होती है। जिसका प्रत्येक शेर एक ही बहर - वजन में रचा गया हो तथा जो काफिये और रदीफ से पाबंद हो। "[65]

"अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये।
जिसकी ख़ुशबू से महक जाये पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।

मेरे दुख - दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाये।
जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये।
गीत उन्मन है, ग़ज़ल चुप है, रूबाई है दुखी
ऐसे माहौल में 'नीरज' को बुलाया जाये।'' [66]

" **2. बेमतला ग़ज़ल** :- जिस ग़ज़ल का पहला शेर मतला न होकर एक आम शेर होता है, उस ग़ज़ल को बेमतला ग़ज़ल कहते हैं। '' [67]

"देखकर वक़्त का ये अजब फ़ैसला
हमको रोते हुए भी हँसी आ गई।'' [68]

" **3. बेमक्ता ग़ज़ल** :- जिस ग़ज़ल के अन्तिम शेर में शायर अपने तखल्लुस का प्रयोग नहीं करता, उस ग़ज़ल को बेमक्ता ग़ज़ल कहते हैं।'' [69]

"कोई माने न माने मुझे लग रहा
अब निकट साँवरे की गली आ गई।'' [70]

" **4. कतआयुक्त ग़ज़ल** :- ग़ज़ल का प्रत्येक शेर स्वतन्त्र इकाई होता है। लेकिन कोई शायर किसी शेर को स्वतन्त्र इकाई रखने में असमर्थ हो जाता है तथा उसे जो कुछ कहना होता है वह एक शेर में कह नहीं पाता तब वह दो या अधिक शेरों की रचना करके अपनी बात को व्यक्त करता है। ऐसी स्थिति में शेर की विषयगत इकाई नष्ट होती है और उन सभी शेरों को संयुक्त रूप से इकाई माना जाता है। ऐसे शेरों को एकत्र कर उन्हें 'कतआ' शीर्षक दिया जाता है और ऐसी ग़ज़ल को कतआयुक्त ग़ज़ल कहते हैं। '' [71]

"अब अँधेरों के घटने की आशा नहीं
अब सवेरे की कोई न उम्मीद है
मोमबत्ती भी जिनसे नहीं जल सकी
उनके हाथों में सब रोशनी आ गई।'' [72]

" **5. मुसलसल ग़ज़ल** :- जिस ग़ज़ल में आरम्भ से लेकर अन्त तक एक ही विषयवस्तु का प्रतिपादन किया जाता है, उसे मुसलसल ग़ज़ल कहते हैं। '' [73]

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ क़ुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमज़ान हो।
मज़हबी झगड़े ये अपने आप सब मिट जायेंगे

और कुछ होकर न गर इन्सान बस इन्सान हो।
कृष्ण की वंशी का आशिक़ तू भी हो जायेगा दोस्त
बज़्म में तेरी अगर शामिल कोई रसखान हो।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिन्दी के उर्दू का कोई दीवान हो।" [74]

"निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि फारसी - उर्दू के ग़ज़लकारों ने शिल्प - विधान को विशेष महत्व दिया है। जैसे - बहरों के नियमों की उपेक्षा, ग़ज़ल के गेय पक्ष की उपेक्षा, तखल्लुस की उदासीनता आदि। इसका प्रधान कारण यह है कि हिन्दी ग़ज़लकारों ने शिल्प की अपेक्षा कथ्य की ओर अधिक ध्यान दिया है। " [75]

इसप्रकार ग़ज़ल के विविध प्रकार दिखाई देते हैं। प्रत्येक प्रकार की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। इनके अध्ययन से हम ग़ज़ल को गहराई से पहचान सकते हैं।

निष्कर्ष :-

ग़ज़ल में प्रेम और श्रृंगारिक भावों का वर्णन होने के कारण, लोगों को आकर्षित करनेवाली यह सबसे प्रभावशाली रचना है। साथ ही हिन्दी ग़ज़लकारों ने अब ग़ज़ल में सामाजिक विषय, जनमानस की पीड़ा, राजनीतिक बोध, वेदना और निराशा के स्वर, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कतिक - नैतिक बोध, अन्याक्य बोध आदि विषयों को समाविष्ट करने से ग़ज़ल का क्षेत्र विस्तारित हो चुका है।

शेर यह ग़ज़ल का प्रमुख अंग है। जिसका शाब्दिक अर्थ केश है। जिसप्रकार किसी युवती का सौन्दर्य बढ़ाने में केश सहायक होते है, ठिक उसीप्रकार ग़ज़ल के भाव - सौन्दर्य में निखार लाने में शेर सहायक होते हैं। दो - दो मिसरों का अर्थपूर्ण होकर एक स्वतंत्र भाव की अभिव्यक्ति करना यह ग़ज़ल की विशेषता है।

ग़ज़ल की परिभाषाओं को देखने के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि, "ग़ज़ल अर्थात दर्दभरी चित्कार।" तथा प्रेमिका के विरह में होनेवाली प्रियतम की दशा का वर्णन। अब व्याख्या के अनुसार ग़ज़ल में दर्द तो आता ही है, साथ ही बहर के कारण यह श्रेष्ठ रचना बन जाती है।

अबतक जितनी जानकारी सामने आयी, उससे यही अनुमान लगाया जा सकता है कि, ग़ज़ल के बारे में जितना कहे उतना कम है। कम शब्दों में अधिक जानकारी देना, पाठकों के मन को छूना, अपना स्वतंत्र पाठक या श्रोता वर्ग बनाना यह ग़ज़ल की विशेषताएँ हो सकती हैं।

ग़ज़ल की क्षमता देखने के पश्चात उसे सभी जान लें, इसी उद्देश्य से ग़ज़ल का विस्तारपूर्वक वर्णन दिया जा रहा है। जिसमें ग़ज़ल का अर्थ, ग़ज़ल की परिभाषा, विभिन्न विद्वानों के मत, ग़ज़ल का शिल्प - विधान, ग़ज़ल के अंग, ग़ज़ल की भाषा, छंद - विधान, रस - परिपाक, अलंकार - योजना, बिम्ब - विधान, प्रतीक-विधान, गेयता और प्रकार की जानकारी दी है।

इसप्रकार ग़ज़ल यह श्रेष्ठतम रचना मानी जाएगी।

संदर्भ सूची

1 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.19,20 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

2 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.9 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

3 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.10 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

4 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.27 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

5 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.10 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

6 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.10,11 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

7 www. Koolpoetry.com

8 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.30,31 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

9 www. Koolpoetry.com

10 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.12 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

11 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.22 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

12 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.12,13 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

13 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.22,23 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

14 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.13 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

15 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.14 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

16 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.119 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

17 www. Koolpoetry.com

18 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.14 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

19 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.14,15 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

20 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.126 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

21 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.15 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

22 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

23 www. Koolpoetry.com

24 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.15 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

25 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.111,112 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

26 www. Koolpoetry.com

27 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.16 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

28 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.115 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

29 www. Koolpoetry.com

30 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.16,17 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

31 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.144 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

32 www. Koolpoetry.com

33 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.58 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

34 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.17 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

35 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.125 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

36 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.17 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

37 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.143,144 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

38 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.18 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

39 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.13 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

40 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.18 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

41 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.38 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

42 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.18 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

43 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.34 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

44 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.18 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

45 हिंदी ग़ज़ल की नई दिशाएँ - सरदार मुजावर - पृ.34 - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 2000 ई.

46 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.19 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

47 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.131 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

48 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.19 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

49 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.129 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

50 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.19 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

51 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

52 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.19,20 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

53 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

54 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.20 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

55 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.107,108 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

56 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.20 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

57 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.126 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

58 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.20 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

59 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.124 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

60 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.21 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

61 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.111 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

62 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.21 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

63 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.135 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

64 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.21 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

65 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.21 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

66 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

67 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.22 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

68 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.123 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

69 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.22 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

70 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.124 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

71 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.22 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

72 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.123 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

73 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.22 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

74 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

75 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ. मधु खराटे - पृ.22 - विद्या प्रकाशन, कानपुर - 2002 ई.

KOLHAPUR